International Journal of Multidisciplinary Education and Research
ISSN: 2455-4588; Impact Factor: RJIF 5.12
Received: 23-05-2019; Accepted: 24-06-2019
www.educationjournal.in
Volume 4; Issue 4; July 2019; Page No. 103-105

स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक विचारों की मौलिकता

डॉ. मुकेश कुमार
सहायक प्रोफेसर, एल.एन.टी. शिक्षण महाविद्यालय पानीपत, हरियाणा, भारत

सारांश
स्वामी विवेकानन्द उन महान दार्शनिक व शिक्षाशास्त्रियों में से एक थे जिन्होंने प्राचीन एवं नवीन विचारों में समन्वय स्थापित किया। अपने दार्शनिक विचारों को व्यावहारिक रूप प्रदान करने के लिए उन्होंने एक शिक्षा–योजना प्रस्तुत की जिसमें उन्होंने बताया कि – "शिक्षा व्यक्ति में पहले से ही निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति है" और शिक्षा के उद्देश्य – जन्मजात शक्तियों का विकास, शारीरिक विकास, मानसिक विकास, चारित्रिक विकास, व्यावसायिक कुशलता का विकास, भ्रातृत्व का विकास और समाज सेवा की भावना का विकास आदि बताये। पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियाँ, अध्यापक का स्थान, बालक का स्थान, अनुशासन, जन शिक्षा और स्त्री शिक्षा पर बड़े मौलिक विचार प्रस्तुत किये। अतः उपर्युक्त विचारों के आधार पर कहा जा सकता है कि विवेकानन्द ने अपने मौलिक शैक्षिक विचारों से शिक्षा जगत को महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

मूल शब्दः व्यावसायिक, जगत, पाठ्यक्रम, शिक्षाशास्त्रिया, विवेकानन्द

प्रस्तावना
स्वामी विवेकानन्द का नाम लेते ही एक ऐसे आदर्शवादी चिंतक व महान शिक्षाशास्त्री का स्मरण हो आता है जिन्होंने अपने ओजस्वी विचारों से समाज को एक नई दिशा देने का प्रयास किया। वे एक वेदांती थे। उनकी सोच मानवतावादी थी। वे उन महान दार्शनिकों व शिक्षाशास्त्रियों में से एक थे जिन्होंने प्राचीन एवं नवीन विचारों में समन्वय स्थापित किया। वे जहाँ कहीं गए वहीं उन्होंने अपने व्यक्तित्व की अमिट छाप छोड़ी। उन्होंने दुनिया को विश्व–बंधुत्व का संदेश दिया। अपने दार्शनिक विचारों को व्यावहारिक रूप प्रदान करने के लिए उन्होंने एक शिक्षा–योजना भी प्रस्तुत की।
स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक विचारों व वर्तमान भारतीय संदर्भ में उनकी प्रासंगिकता को जानने के लिए उनके जीवन दर्शन को जानना आवश्यक है।

विवेकानन्द का जीवन दर्शन
- वे ईश्वर को संसार का रचयिता व सर्वव्यापक मानते थे।
- जीवन का अंतिम उद्देश्य आत्मानुभूति प्राप्त करना है।
- सभी धर्म समान रूप से महत्त्वपूर्ण हैं। सबसे बड़ा मानव–धर्म है।
- पूर्णता व्यक्ति में पहले से ही विद्यमान है, आवश्यकता है उसे जानने व अभिव्यक्ति देने की।
- जीवन एक संघर्ष है, इसमें सफलता के लिए व्यक्ति को निडरता, साहस, सत्यता, स्वतंत्रता तथा वीरता जैसे मूल्यों को विकसित करना होगा।
- भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों प्रकार का ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक है।
- जीवन में ग्रहण की अपेक्षा त्याग का महत्त्व है। अतः हमें त्याग के लिए तत्पर रहना चाहिए।

विवेकानन्द के शैक्षिक विचार
शिक्षा का अर्थ – उनका मानना है कि जानकारी प्राप्त करना या तथ्यों को रट लेना शिक्षा नहीं है। पूर्णता तो व्यक्ति में पहले से ही विद्यमान है। शिक्षा ऐसा वातावरण निर्माण करने वाली प्रक्रिया है जिससे उस अन्तर्निहित पूर्णता का विकास हो सके। उनके शब्दों में – "शिक्षा व्यक्ति में पहले से ही निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति है।"
उनके अनुसार कोई किसी को शिक्षित नहीं करता, व्यक्ति स्वयं सीखता है तथा आत्म विकास की ओर अग्रसर होता है। उनका कहना है कि – "शिक्षा का कार्य यह देखना है कि बच्चों के आत्म विकास के मार्ग में किसी प्रकार की बाधा न पड़े।"

शिक्षा के उद्देश्य
उन्होंने आत्मानुभूति को जीवन का उद्देश्य बताया है। उन्होंने इसकी प्राप्ति में सहायक निम्नलिखित शैक्षिक उद्देश्यों का सुझाव दिया है –
- **जन्मजात शक्तियों का विकासः** विवेकानन्द का कहना है कि बच्चों में कुछ जन्मजात योग्यताएँ होती हैं। शिक्षा का उद्देश्य इन्हें बाहर निकालना तथा विकास का अवसर प्रदान करना है।
- **शारीरिक विकासः** उनके अनुसार स्वस्थ एवं पुष्ट शरीर वाले व्यक्ति ही अपना एवं अपने देश का विकास कर सकते हैं। जीवन संघर्ष में वे ही सफलता प्राप्त कर सकते हैं। अतः शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति का शारीरिक विकास करना होना चाहिए।
- **मानसिक विकासः** व्यक्ति अपने भीतर निहित पूर्णता को अपनी बुद्धि से ही जान सकता है। अतः शिक्षा द्वारा व्यक्ति का बौद्धिक विकास होना आवश्यक है।
- **चारित्रिक विकासः** उन्होंने जीवन में चरित्र को बहुत ऊँचा स्थान दिया क्योंकि चरित्र से ही व्यक्ति के विचारों व कर्मों में पवित्रता आती है तथा वह आध्यात्मिक विकास कर सकता है। अतः शिक्षा का उद्देश्य चरित्र निर्माण करना होना चाहिए।
- **व्यावसायिक कुशलता का विकासः** उनके अनुसार सच्ची शिक्षा वह है जो व्यक्ति को स्वावलंबी बनाए तथा समाज से गरीबी को दूर करे। आध्यात्मिक विकास के लिए व्यक्ति की भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति आवश्यक है, इसलिए शिक्षा का उद्देश्य व्यावसायिक कुशलता का विकास करना होना

चाहिए।

- **भ्रातृत्व का विकासः** उनका मानना था कि सभी प्राणियों व वस्तुओं में एक ही शक्ति विद्यमान है, अतः हमें भेद–भाव अथवा असमानता का दृष्टिकोण नहीं रखना चाहिए। पूरे विश्व के लोग एक ही जाति – 'मानव जाति' से संबंध रखते हैं, अतः शिक्षा केवल राष्ट्र प्रेम ही नहीं, विश्व बंधुत्व की भावना का विकास करे यही शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए।
- **समाज सेवा की भावना का विकासः** विवेकानन्द के अनुसार समाज के व्यक्ति पर बहुत ऋण हैं, अतः शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति में समाज सेवा की भावना का विकास करना होना चाहिए जिससे वह ऋण मुक्त हो सके।

पाठ्यक्रम

विवेकानन्द द्वारा प्रस्तुत पाठ्यक्रम की योजना निम्न सिद्धांतों पर आधारित है –

- पाठ्यक्रम व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करने में सहायक हो।
- रोजगारपरक हो।
- लचीला एवं परिवर्तनीय हो।
- विषयों के साथ–साथ उसमें विभिन्न गतिविधियाँ भी शामिल हों।
- कला तथा विज्ञान जैसे विषयों को उसमें स्थान दिया जाए। उसमें वेदांत व विज्ञान का समन्वय होना चाहिए।

इन सिद्धांतों के आधार पर उन्होंने पाठ्यक्रम में निम्न विषयों को रखे जाने का सुझाव दिया

- वेदांत, धर्म तथा दर्शन आदि विषय
- अंग्रेजी, संस्कृत एवं मातृ–भाषा
- शारीरिक शिक्षा व व्यायाम आदि
- उद्योग/व्यवसाय की शिक्षा
- कला
- भूगोल, इतिहास, अर्थशास्त्र, गृह विज्ञान व मनोविज्ञान आदि।

शिक्षण विधियाँ

- **अनुकरण विधिः** विवेकानन्द का मत था कि बच्चा अनुकरण द्वारा सीखता है। अतः अध्यापक को बच्चे के समक्ष उन गुणों का आदर्श प्रस्तुत करना चाहिए जिन्हें वह उसमें विकसित करना चाहता है।
- **एकाग्रताः** उन्होंने आत्मानुभूति को जीवन का मुख्य उद्देश्य बताया। इसके लिए चित्त की एकाग्रता आवश्यक है। अन्य विषयों का ज्ञान भी अच्छी प्रकार से तभी प्राप्त किया जा सकता है जब बच्चा अपने मन को पूरी तरह एकाग्र करे।
- **व्याख्यान विधिः** विवेकानन्द प्रभावशाली वक्ता थे। उनके व्याख्यान लोगों के दिल व दिमाग पर बहुत गहरा असर करते थे। अतः उनके अनुसार व्याख्यान विधि द्वारा भी बच्चों को बहुत कुछ सिखाया जा सकता है।
- **परिचर्चा विधिः** विवेकानन्द का विचार था कि परिचर्चा या वाद–विवाद विधि का प्रयोग करके बच्चों में ज्ञान का विकास किया जा सकता है।
- **अनुभव द्वारा सीखनाः** उन्होंने तकनीकी व औद्योगिक शिक्षा को बहुत महत्त्व दिया। इन विषयों की शिक्षा के लिए उन्होंने अपने अनुभव पर आधारित विधियों का प्रयोग करने का सुझाव दिया।

इसके अतिरिक्त उन्होंने व्यक्तिगत मार्गदर्शन व परामर्श विधि का भी समर्थन किया। उनका मत था कि यात्रा व भ्रमण द्वारा भी बच्चों को बहुत कुछ सीखने का मौका मिल सकता है।

अध्यापक का स्थान

वे अध्यापक को ईश्वर के समान मानते हुए उसे शिक्षा प्रक्रिया में महत्त्वपूर्ण स्थान देते हैं। वही बच्चे के भीतर निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करने के लिए उचित वातावरण तैयार करता है। वे अध्यापक से निम्न अपेक्षाएँ रखते हैं –

- वह बच्चे के लिए एक मित्र, मार्गदर्शक व परामर्शदाता की भूमिका का निर्वाह करे।
- वह शास्त्रों का ज्ञाता व अपने विषय का विशेषज्ञ हो।
- वह बाल मनोविज्ञान को जानने वाला, त्यागशील एवं बच्चों के प्रति सहानुभूति रखने वाला हो।

स्वामी जी के शब्दों में – "शिक्षक एक दार्शनिक, मित्र व मार्गदर्शक है।"

बालक का स्थान

वे शिक्षा प्रक्रिया में बालक को मुख्य स्थान देते हैं। उनके अनुसार बच्चे में जन्मजात प्रतिभा होती है। बच्चे को स्वयं उस प्रतिभा को पहचानना व बाहर निकालना होता है। इसके लिए उसमें शुद्धता, ज्ञान प्राप्ति की इच्छा, लगन, एकाग्रता व श्रम के प्रति निष्ठा की भावना होनी आवश्यक है। उसमें गुरु के प्रति श्रद्धा भी होनी चाहिए।

अनुशासन

अनुशासन के लिए वे दण्ड का विरोध करते हैं और बच्चों को स्वतंत्रता दिए जाने का समर्थन करते हैं। उनका मानना है कि हमें ऐसा अच्छा वातावरण तैयार करना चाहिए जिसमें बच्चों में आत्म–अनुशासन का विकास हो सके। आत्म संयम ही सच्चा अनुशासन है।

जन शिक्षा

विवेकानन्द के अनुसार भारतीयों की गरीबी व दुःखों का कारण अज्ञानता है। अतः प्रत्येक व्यक्ति तक शिक्षा को पहुँचाया जाना चाहिए। सामान्य व्यक्ति को उसकी मातृ–भाषा के माध्यम से शिक्षा दी जानी चाहिए। जनसामान्य की शिक्षा के संदर्भ में उनका कथन अवलोकनीय है – "अगर हमें भारत का पुनरुत्थान करना है तो हमें उनको शिक्षित करना होगा।" वे स्त्री शिक्षा को भी आवश्यक मानते थे।

विवेकानन्द के विचारों का वर्तमान शिक्षा पर प्रभाव

उनके शैक्षिक विचारों ने वर्तमान भारतीय शिक्षा को निम्न रूपों में प्रभावित किया है –

- आज सभी शिक्षाशास्त्री व मनोवैज्ञानिक यह स्वीकार करते हैं कि प्रतिभा बच्चे में जन्मजात होती है। शिक्षा उसे बाहर निकालने वाली प्रक्रिया है। यही स्वामी विवेकानन्द ने कहा था।
- स्वामी विवेकानन्द के विचारों का ही प्रभाव है कि आज शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक व चारित्रिक आदि विभिन्न पक्षों का विकास करना माना जाता है।
- आज माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा को व्यावसायिक बनाया जा रहा है। विभिन्न समाजोपयोगी उत्पादक कार्यों को विद्यालय पाठ्यक्रम में रखा जा रहा है। शिक्षा को रोजगारोन्मुखी बना देश से गरीबी व बेरोजगारी दूर करने का प्रयत्न किया जा रहा है। यही विवेकानन्द चाहते थे।
- स्वतंत्रता के बाद विभिन्न शिक्षा आयोगों ने राष्ट्रीय एकता व अंतर्राष्ट्रीय सद्भावना के विकास को शिक्षा का महत्त्वपूर्ण उद्देश्य बताया है। विवेकानन्द भी शिक्षा द्वारा राष्ट्र–प्रेम एवं विश्व–बंधुत्व की भावना का विकास करना चाहते थे।
- यह स्वामी जी के सुझावों का ही प्रभाव है कि आज

मातृ–भाषा के माध्यम से शिक्षा देने पर बल दिया जा रहा है।

- स्वामी जी जन शिक्षा के लिए शिक्षा को लोगों के घर–घर तक पहुँचाना चाहते थे। स्वतंत्रता के बाद उनके इन्हीं विचारों से प्रभावित होकर संविधान में शिक्षा को सार्वभौमिक बनाने का लक्ष्य रखा गया। सरकार ऐसी अनेक योजनाएँ आरंभ कर रही है जिससे समाज के प्रत्येक वर्ग व दूरस्थ क्षेत्रों में रहने वाले लोगों तक भी शिक्षा पहुँच सके।
- सरकार स्त्री शिक्षा के लिए अनेक कार्यक्रम चला रही है। अनेक राज्यों में उन्हें बी.ए. तक निःशुल्क शिक्षा दी जा रही है। लड़कियों के लिए अलग से स्कूल व कॉलेज खोले जा रहे हैं। उनके लिए छात्रवृत्तियों आदि की सुविधाएँ दी जा रही हैं।
- संस्कृत को विद्यालय पाठ्यक्रम में स्थान दिया जा रहा है तथा उच्च स्तर पर इच्छुक विद्यार्थियों को इसके अध्ययन की सुविधा प्रदान की जा रही है।
- विद्यालय पाठ्यक्रम में नैतिक व मूल्य शिक्षा को भी रखा गया है। नई शिक्षा नीति तथा विभिन्न शिक्षा आयोगों ने भी इन विषयों के शिक्षण का सुझाव दिया है।
- स्वामी जी के विचारों के प्रभाव के कारण ही आज बच्चों में नैतिक व आध्यात्मिक मूल्यों के विकास के साथ–साथ वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास का प्रयास भी किया जा रहा है।
- वाद–विवाद, व्याख्यान व अनुभव द्वारा सीखना जैसी विधियों का प्रयोग विभिन्न विषयों के शिक्षण के लिए किया जा रहा है। छोटी कक्षाओं में अनुकरण विधि भी प्रयोग में लायी जा रही है। इसके अतिरिक्त उन्होंने सीखने के लिए जिस एकाग्रता का समर्थन किया है उसका महत्त्व तो सार्वकालिक ही है।
- आज मनोवैज्ञानिक व शिक्षाशास्त्री अध्यापक को एक दार्शनिक, मित्र व मार्गदर्शक के रूप में स्वीकार करते हैं।
- आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में दण्ड के लिए कोई स्थान नहीं है। बच्चों में आत्म–अनुशासन की भावना का विकास किया जाता है।

निष्कर्ष

विवेकानन्द ने आध्यात्मिकता व प्राचीन संस्कृत ग्रंथों के अध्ययन–अध्यापन पर बहुत बल दिया पर उनके शैक्षिक विचारों में बहुत कुछ ऐसा है जो आज भी प्रासंगिक है। उनके शिक्षा दर्शन ने स्वतंत्र भारत की शिक्षा व्यवस्था पर बहुत अधिक प्रभाव छोड़ा है। अतः कहा जा सकता है कि शिक्षा जगत को उनका योगदान सराहनीय है।

सन्दर्भ सूचि

1. डॉ. सिंह एवं सिंह, शिक्षाशास्त्र, पृ. 28
2. सक्सेना, एन.आर.ए., उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, पृ. 349
3. शर्मा, डॉ. आर.ए., शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक मूल आधार, पृ. 520
4. किरण, चाँद, शिक्षा : दार्शनिक परिप्रेक्ष्य, पृ. 187
5. ओड़, डॉ. लक्ष्मी लाल के., शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि, पृ. 109